LEARNING AND TEACHING
Unit-5, Bullet No.-3

Imagination- कल्पना

कल्पना का वर्गीकरण (Classification of Imagination)

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने कल्पना के वर्गीकरण को भिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया है। यहाँ पर मैक्डूगल एवं ड्रेवर के वर्गीकरण को दिया जा रहा है।

मैक्डूगल का वर्गीकरण—

मैक्डूगल ने कल्पना को दो भागों में विभाजित किया है—

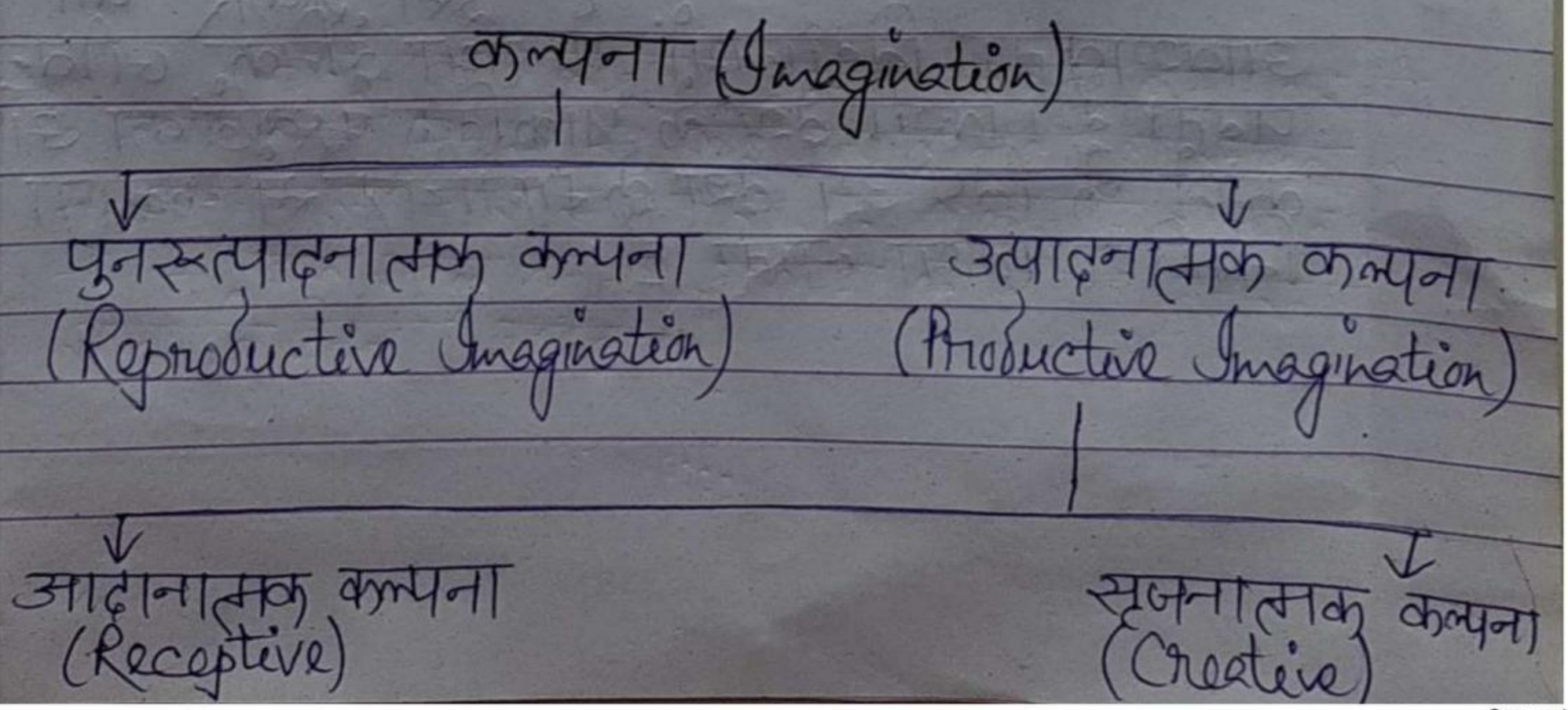
(i) पुनरुत्पादक कल्पना (Reproductive Imagination)
(ii) उत्पादक कल्पना (Productive Imagination)

इसको भी मैक्डूगल ने दो भागों में विभाजित किया है—

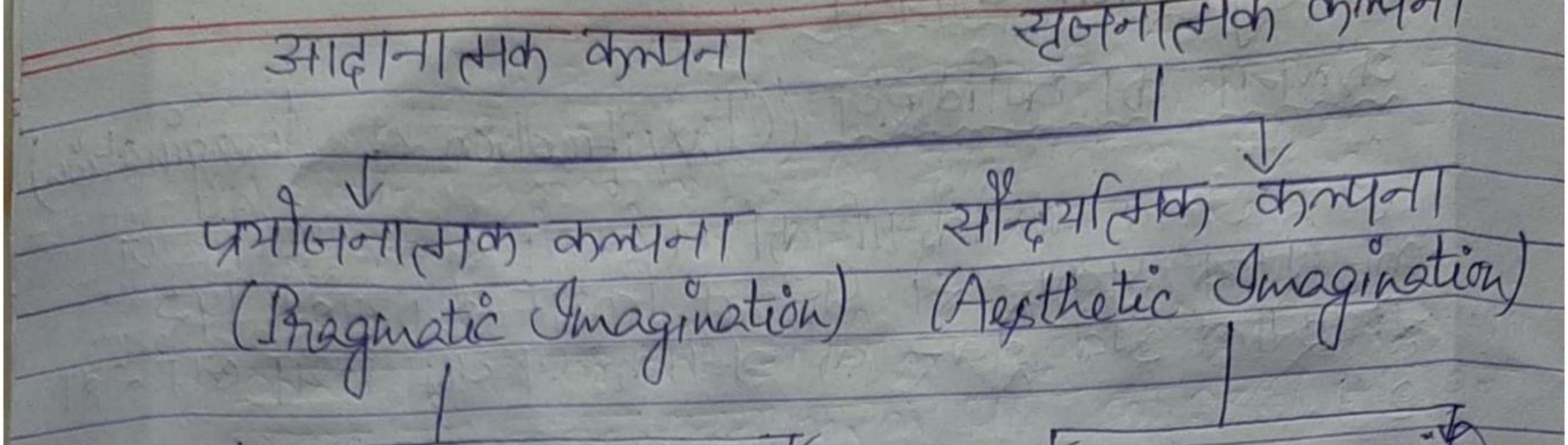
(क) रचनात्मक कल्पना (Constructive Imagination)
(ख) सृजनात्मक कल्पना (Creative Imagination)

ड्रेवर का वर्गीकरण—

ड्रेवर ने कल्पना का अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो आज सर्वमान्य है। इनका वर्गीकरण अग्रलिखित प्रकार से है—



Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner



ड्रेवर के अनुसार वर्गीकरण का विस्तार निम्नवत है —

① पुनरुत्पादक कल्पना — विगत अनुभवों की प्रतिमूर्त्तियों की हम जब कल्पना करते है, यह निम्न कोटि की होती है क्योंकि इसमें व्यक्ति को किसी प्रकार के गहन विचार करने की आवश्यकता नहीं होती।

② उत्पादक कल्पना — इस प्रकार की कल्पना में हम विगत अनुभवों को नवीन क्रम में रखते है। यह कल्पना दो प्रकार की होती है —

(क) आदानात्मक कल्पना :—

आवश्यकता विद्यालयों मे तथा दैनिक जीवन में पड़ती है। किसी देश के प्राकृतिक भूखण्डों का अध्ययन करने के लिए उस देश के मानचित्र से कल्पना का निर्माण किया जाता है।

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

(स) सृजनात्मक कल्पना :—

यह आद्यात्मात्मक कल्पना से उच्चतर होती है। इसमें पुराने अनुभवों के आधार पर कोई नवीन रचना की जाती है। यह वैज्ञानिक आविष्कारों एवं साहित्यिक रचनाओं में देखने को मिलती है। यह दो प्रकार की होती है — ① सैद्धान्तिक ② प्रायोगिक। सैद्धान्तिक कल्पना के द्वारा किसी सिद्धान्त की कल्पना के द्वारा कार्य रूप में परिणित करने से सम्बन्धित कल्पना की जाती है। यह स्वतंत्र न होकर भौतिक वस्तुओं पर आधारित होती है।

सौंदर्यात्मक कल्पना :—

यह कल्पना सरस होती है। यह अधिकांश कवियों एवं साहित्यकारों में पाई जाती है। यह प्रयोजन-साधक कल्पना की अपेक्षा स्वतंत्र होती है तथा वाह्य जगत से मुक्त होती है। इसमें क्रिया के साथ ही साथ आनन्द की प्राप्ति होती है। यह भी दो प्रकार की होती है — ① कलात्मक ② तरंगिक

कलात्मक कल्पनाएँ रचनात्मक होती हैं तथा इनके उद्देश्य हुआ करते हैं। इससे व्यक्ति एवं समाज दोनों का लाभ होता है। यह फलदायी होती है; जैसे — चित्र बनाना, कार्टून बनना, उपन्यास लिखना, नाटक लिखना, सामाजिक बुराइयों पर प्रहसन या एकांकी लिखना आदि।

तरंगिक कल्पनायें उद्देश्य-विहीन हुआ करती हैं तथा इनमें यथार्थ में कोई उत्पाद नहीं हो सकता है। ये अनायास और सोभा से परे कल्पनाएँ होती हैं; जैसे — हवाई महल बनाना, आकाश को नीचे उतारना, राष्ट्रपति बनना आदि।

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

कल्पना की शिक्षा में उपयोगिता :—

कल्पना की शिक्षा में उपयोगिता निम्नलिखित है :—

(1) कल्पना बालक को उनके अनुभव की सीमा से पार कर सोचने की क्षमता प्रदान करता है।

(2) कल्पना बालक को अपने लक्ष्य को केंद्रित कर उसके विषय में चिंतन मनन करके पाने की इच्छा जाहिर करता है।

(3) कल्पना बालक को अपनी रचनात्मक शक्ति का विकास करने में योग देती है।

Scanned by TapScanner

Scanned by TapScanner